कलीसिया अध्याय 18

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज़ सुनने के लिए ***प्रार्थना*** करें।
अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **फिलिप्पियों 3-4 व कुलुस्सियों 1-2**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (गलातियों 1-4) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह की तैयारी]* **श्रृंखला च का पुनरावलोकन**

दो दो करके **श्रृंखला च का पुनरावलोकन करें: "मसीही विवाह की तैयारी"**
(1) दोनों पक्ष विश्वासी हों । 2 कुरिन्थियों 6:14. अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति?
(2) जीवन के समान लक्ष्य। आमोस 3:3 यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत हों; तो क्या वे एक संग चल सकेगें?
(3) संयम। 1 थिस्लुनिकियों 4:3-5 क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो: अर्थात व्यभिचार से बचे रहो। और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपनी पत्नी को प्राप्त करना जाने, और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों के समान करो जो परमेश्वर को नहीं जानतीं।
(4) उचित समय। सभोपदेशक 8:5-6 और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है। क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है।
(5) उचित प्राथमिकताएं। मत्ती 6:33 इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएगीं।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 7:1-53**

परिचय। पाँच कदमों के तरीके का इस्तेमाल करते हुए **यूहन्ना 7:1-53** का अध्ययन करें। यूहन्ना 7:1-9 वर्णन करता है कि यीशु गलील में खुले आम प्रचार करता रहा(अप्रेल-अक्टूबर 29 ई.प)[1], लेकिन वह यहूदा में तम्बू के फसह पर गुप्त रूप में जाता है(अक्टूबर 29 ई.प)। यीशु मन्दिर में उपस्थित भीड़ से आग्रह करता है। " यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेगी।'

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**
पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 7:1-53 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें . **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

7:37-39

खोज 1.जीवन के जल की नदियां

यहूदियों का झोपड़ी का पर्व पूरा एक सप्ताह तक मनाया जाता था। हर सातवें दिन, एक याजक एक घड़े में शिलोम के कुण्ड से पानी भरा करता था। वह एक जुलूस के साथ इस पानी को मन्दिर तक ले जाया करता था। लोगों द्वार बजायी जाने वाली तुरहियों और बाजे गाजे की आनन्दमयी ध्वनियों के बीच वह एक कीप के माध्यम से पानी को होमबलि की वेदी के तल तक पहुँचा देता था। यह विधी इस्राएलियों को उस पानी के मुहैय्या कराने की याद दिलाती थी जो उन्हें मरूस्थल में चट्टान से पीने को मिला था(निर्गमन 17:1-7) और जो भविष्य में आने वाले मसीही काल की आत्मिक आशीषों की ओर इशारा करती है(1कुरिन्थियों 10:4)। सम्भवत: होमबली पर इसी प्रकार पानी चढ़ाने की विधि के पूरा होने पर, यीशु ने खड़े होकर ऊँची आवाज़ से कहा होगा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेगी।' ऐसा प्रतीत होता है,मानो यीशु मसीह भीड़ से कहने का प्रयास कर रहे हैं कि वह जल उसकी ओर संकेत कर रहा है या उसके बारे में बता रहा है। यीशु मसीह ही जीवन के जल का मूल झरना है। यीशु मसीह के पास आने और उस पर विश्वास करने से दो महत्वपूर्ण बातें होती हैं।

(1) विश्वासी जन (मसीही) अनन्त जीवन को प्राप्त करता है।

"जो कोई यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा"(यूहन्ना 6:35)। जितने लोग यीशु मसीह नामक, सोते से पीते हैं, उन्हें सदा काल के लिए सन्तुष्टि प्राप्त होती है। वे अनन्त जीवन प्राप्त करेगें, अर्थात, सिद्ध छुटकारा। वे उस आशीष को प्राप्त करेगें जिसकी यीशु ने यूहन्ना 4:14 में सामरी स्त्री से प्रतिज्ञा की थी,"जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; वरन वह उसमें से एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।

(2) विश्वासी स्वयं दूसरों के लिए एक अनन्त आशीष का माध्यम बन जाता है।

"जो कोई यीशु मसीह पर विश्वास करता है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।(यूहन्ना 7:38)। पुराने नियम में जीवन की नदी परमेश्वर के शहर में पायी जाती थी(भजन 46:4)। जो मन्दिर के द्वार में से होकर बही और आगे चलकर अरम्पार आशीषों में तबदील हो गयी(यहेजकेल 47:1-12)। इसलिए यीशु ने कहा,"जैसा की धर्मशास्त्र में लिखा है"। पवित्र आत्मा पुराने नियम में लिखे अनुच्छेदों को उनके अत्यन्त गहन मायनों के साथ नये नियम में इस्तेमाल करता है। सम्पूर्ण जगत में आज तक जितने भी विश्वासी पाये गये हैं और विद्यमान हैं मिलकर "परमेश्वर का शहर" हैं अर्थात नया यरूशलेम(इब्रानियों 12:22-24; प्रकाशितवाक्य 21:9-10)। और यूहन्ना 7:38 के अनुसार जिन जीवन के जल की नदियों को चित्रण किया गया है वे आज प्रत्येक विश्वासी के हृदय में से होकर बह रही है। मसीह में आने के बाद, एक विश्वासी की अपनी प्यास बुझती है और वह खुद दूसरों के जीवन में बहुतायत की आशीष का एक माध्यम बन जाता है।

पुराना नियम आशीष की नदियों के मुद्दे को पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने से जोड़ता है(यशायाह 43:3)। इसी तरह लेखक यूहन्ना कहता है, "यीशु ने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था।(यूहन्ना 7:39)" यीशु ने कहा कि जो कोई उस में विश्वास करेगा वह अनन्त जीवन अर्थात सिद्ध छुटकारा पाएगा, और वर्तमान में बहुतायत का जीवन। यीशु मसीह के पास आने वाले और उस में विश्वास करने वालों के लिए यीशु मसीह अनन्त जीवन व बहुतायत के जीवन का मूल सोता है।

अप्रैल और अक्टूबर 29 ईसा.पश्चात(मरकुस अध्याय 7-9)के बीच गलील में यीशु की सेवानिवृत्ति की सेवाकाई। अधिकतर समय में यीशु कपरनऊम में अपने चेलों के साथ ज़्यादा समय बिताने के लिए भीड़ से बचकर अलग निकल गये। यीशु कपरनऊम से गलील(गलील की झील के उत्तरी छोर)वहां से सोर और सिदोन(गलील की झील का उत्तरी छोर)और गलील के अधिकतर भागों में गये। उसके बाद वह दिकापुलिस (गलील के दक्षिणी भाग) में, फिर गलील के पिछले भाग(दलमानुथा),फिर गलील छोड़कर केसरिया फिलिप्पी को गये(गलील के दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र) और बाद में उन्होंने कपरनऊम वापस जाते हुए गलील के बहुत बड़े हिस्से में यात्रा की। उसने यहूदिया में जाने की कोशिश नहीं की क्योंकि यहूदी उसको मारने की खोज में लगे हुए थे।

लेकिन यह प्रतिज्ञा तब तक पूरी नहीं होने वाली थी जब तक कि मसीह अपनी महिमा में नहीं पहुँच जाता, अर्थात जब तक की उसे क्रूस नहीं मिलती, वह जी न उठता, स्वर्ग में उठा नहीं लिया जाता और स्वर्ग के सिंहासन पर विराजमान नहीं हो जाता। केवल तभी वह विश्वासियों के हृदय और जीवन में स्वर्ग से जीवन के जल की नदियों को उण्डेल सकता था। प्रेरित यूहन्ना उल्लेख करते हैं कि यीशु मसीह इस स्थान पर "पवित्र आत्मा के बपतिस्मे" (अर्थात उसकी मृत्यु के बाद पवित्र आत्मा उण्डेले जाने)के बारे में बोल रहे हैं। पवित्र आत्मा के द्वारा ही यीशु मसीह विश्वासियों के जीवन व हृदय में नया जन्म व

छुटकारा देने का काम करते हैं। हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में पढ़ सकते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद से विश्वासी दूसरे लोगों के लिए बहुतायत की आशीष बन गये। उन्होंने संसार के अनगिनत लोगों को छुटकारे का सुसमाचार सुनाया।

7:45-52

खोज 2. व्यवस्था को जानना और उसका पालन करना।

यहूदियों के व्यवस्थापकों अर्थात फरीसियों ने मन्दिर के सिपाहियों को यीशु को पकड़ने की आज्ञा दी। लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके, क्योंकि मन्दिर की रक्षा करने वाले स्वयं यीशु के अद्‌भुत कामों को देखकर अचम्भित थे। वे सिपाही कहने लगे," कि किसी मनुष्य ने ऐसी बातें नहीं कीं"(यूहन्ना 7:46)। फरीसी क्रोधित होकर सिपाहियों पर यीशु द्वारा भरमाये जाने का आरोप लगाने लगे। और वे कहने लगे कि फसीरियों या सरदारों में से किसी ने भी यीशु पर विश्वास नहीं किया, और जितने लोग यीशु पर विश्वास करते हैं वे पुराने नियम को अर्थात व्यवस्था को नहीं जानते और श्रापित हैं।

लेकिन, निकुदेमुस नामक एक जन जो यहूदियों के सरदारों में से एक था, उसने लोगों के मन को व्यवस्था की ओर आकर्षित किया। उसने कहा कि व्यवस्था के अनुसार किसी व्यक्ति को अपनी सफाई पेश करने का मौका दिये और यह जाने बिना कि वह क्या करता है,दोषी नहीं ठहराया जा सकता(व्यवस्थाविवरण 1:16-17)। परन्तु, यहूदी सरदार बिना मुकदमे के ही यीशु पर दोष लगा रहे थे। इस दृष्टिकोण से अगर देखें तो, यद्यपि जो यहूदी सरदार व फरीसी दावा कर रहे थे कि वे व्यवस्था को जानते थे, उन्होंने व्यवस्था का पालन नहीं किया! इस तरह से उनकी अज्ञानता सरे आम खुल कर सामने आ गयी। और यदि वे व्यवस्था में लिखी बातों से अनजान नहीं थे, तो ज़ाहिर था कि वे व्यवस्था का पालन करने के लिए तैयार या इच्छुक नहीं थे।

मत्ती 23:3 में भी यदि देखें तो, यीशु ने भी यहूदी धर्म के रखवालों पर आरोप लगाया कि वे जिन बातों को प्रचार करते हैं वैसे काम नहीं करते। अत:, मेरे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर चाहते हैं कि उसकी जो इच्छा मुझ पर प्रगट की गयी है मैं उसका पालन करूँ। एक मसीही जन को उन बातों का अभ्यास करना चाहिए जिन बातों का वह प्रचार करता और जिन पर विश्वास करता है। उसे बाइबल की उन बातों को मानना चाहिए जिन्हें वह बाइबल से जानता है।

कदम 3. प्रश्न.	व्याख्या
ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं? आईये यूहन्ना 7:1-53 में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते। **लिखें:** अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें। साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।) **चर्चा करें।**(उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें) (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)	

7:2

प्रश्न 1. झोपड़ी का पर्व क्या था?

ध्यान दें।

(1) पुराने नियम में सात निर्धारित पर्व

पुराने नियम में सात धार्मिक पर्वों का उल्लेख किया गया है(लैवव्यवस्था 23; गिनती 28:29)।

- सबत
- फसह और अखमीरी रोटी का पर्व

- सप्ताहों का पर्व या कटनी का पर्व(पहली फसल का पर्व) या पिन्तेकुस्त
- तुरही फूँकने का पर्व
- प्रायश्चित का दिन
- पूरीम पर्व (एस्तेर 9:18-32)

जिसमें से तीन पर्व एक ही साथ मनाये जाने वाले धार्मिक(तीर्थ यात्रा) पर्व हुआ करते थे, इस दौरान सारे राष्ट्रों से यहूदी लोग पर्व मनाने के लिए यरूशलेम में इकट्ठा हुआ करते थे(व्यवस्थाविवरण 16:16):

- फसह के पर्व को फसल के *प्रारम्भ में* मनाया जाता था
- पिन्तेकुस्त का पर्व कटनी या फसल के *अन्त में* मनाया जाता था।
- और झोपड़ी का पर्व फसल के लिए परमेश्वर का धन्यवाद देने के रूप में मनाया जाता था।

(2) झोपड़ियों का पर्व।

झोपड़ियों का पर्व यहूदियों के कलैण्डर के सातवें महीने में मनाया जाता था, अर्थात लगभग अक्टूबर के महीने में और लगभग सात दिनों तक चलता था। यह मात्र कटनी का पर्व ही नहीं था, जिसमें इस्राएली लोग अंगूरों की फसल के लिए परमेश्वर का धन्यवाद देते थे वरन यह एक स्मरणोत्सव भी था जिसमें इस्राएली स्मरण करते थे कि परमेश्वर ने किस प्रकार मरूस्थल में उनकी अगुवाई की और वे आशा करते थे कि परमेश्वर भविष्य में भी उनको व सारे संसार को आशीषित करेगें। सात दिनों के इस पर्व में लोग अपने साथ बलिदानों को लाते, रहने के तम्बुओं या झोपड़ियों को बनाते और रात में उन्हीं में रहा करते, ज्योर्तिमय शोभायात्रा निकालते और वेदी पर पानी उण्डेला करते थे। घरों की छतों पर और गलियों में पेड़ों की टहनियों और पत्तों की मदद से झोपड़ियों को बनाया जाता था और इस पर्व में भाग लेने वाले तीर्थ यात्रियों को ठहरने के लिए शरण दी जाती थी। मन्दिर के भीतर एक विशाल दीपक या मशाल में ज्योति जलायी जाती थी जो यह याद दिलाती थी कि निर्गमन के बाद में परमेश्वर ने आग का खम्बा बनकर किस प्रकार से इस्राएलियों की अगुवाई की थी। रात में मशालें लेकर एक जलूस भी निकाला जाता था।

जल अर्पण क्रिया को मरीबा के उस सोते को स्मरण करते हुए अर्पित किया जाता था जब चमत्कारी ढंग से उसमें से पानी निकलने लगा था(निर्गमन 17:1-7)। पर्व के सातों दिन, एक याजक शिलोम के कुण्ड से पानी को भरकर गाजे बाजे के साथ मन्दिर में लाता था। मन्दिर में आकर वह तुरहियों के फूँके जाने और लोगों द्वारा खुशी की जयकारों के माहौल में एक कीप के द्वारा वेदी पर पानी को उण्डेल देता था, जो मेलबलि की वेदी के तले में पहुँच जाता था।

पानी का उण्डेला जाना लोगों का पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं की याद दिलाता था,"क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएं बहाऊँगा; मैं तेरे वंश पर अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उण्डेलूँगा(यशायाह 44:3)। "अहो सब प्यासे लोगों,पानी के पास आओ (यशायाह 55:1)और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता(यशायाह 58:11)। इसी कारण यीशु पूरे आत्म विश्वास के साथ 38वें वचन में कह सका,"जैसा पवित्रशास्त्र में आया है "उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी"।

7:6

प्रश्न 2. यीशु ने ऐसा क्यों कहा कि अभी उसका उपयुक्त समय नहीं आया है?

ध्यान दें। अध्याय 7 में हम तीन बार "मेरा नियुक्त समय नहीं आया"(ग्रीक : काईरोस) या "मेरा समय"(ग्रीक : होरा) को पाते हैं। इसका अर्थ है यीशु के काम करने का नियुक्त या निर्धारित समय। बाइबल हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि यीशु के इस धरती पर काम करने के एक नियुक्त समय था, जिसे परमेश्वर पिता की ओर से उसकी योजना के तहत आदि काल से ही निर्धारित कर दिया गया था।

पद 6 और 8 में, यीशु मसीह कहते हैं, उसका पर्व में जाने का समय अभी तक नहीं आया है। यीशु मसीह द्वारा फरीसियों से स्पष्टता से यह कहने के बाद से कि वे परमेश्वर पिता को नहीं जानते, फरीसी यीशु को पकड़ने की ताक में लगे हुए थे(यूहन्ना 7:28-30)। लेकिन किसी ने भी उस पर हाथ नहीं डाला, क्योंकि अब तक उसका समय नहीं आया था। चाहे कैसी भी कठिन परिस्थितियां यीशु को चारों और से घेरे हुए थी, लेकिन वह हमेशा सुरक्षित बच जाता था, क्योंकि अभी तक यह परमेश्वर पिता की इच्छा में नहीं था कि यीशु उस समय मरे।

केवल यूहन्ना 12:23-24 में यीशु कहते हैं, "वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो"। उसके बाद यीशु ने नबूवत की कि वह मरने वाला है। यूहन्ना 13:1 में वह कहता कि उसके लिए इस संसार को छोड़कर पिता के पास जाने का समय आ गया है। और यूहन्ना 17:1 में, यीशु पिता से प्रार्थना करते हैं,"हे पिता अब वह समय आ गया है कि तू अपने पुत्र

की महिमा करे। अत: यीशु मसीह के धरती पर आने, उसके द्वारा सारे कामों को करने और मरने का समय, सब परमेश्वर पिता द्वारा उसकी योजना के अन्तर्गत आदिकाल से निर्धारित किया गया था। धरती के इतिहास में छुटकारे के इतिहास को निर्धारित करने वाला कोई मनुष्य नहीं, वरन स्वयं स्वर्ग में विराजमान सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर है।(1कुरिन्थियों 2:8)

7:14-16

प्रश्न 3. बिना शिक्षा प्राप्त किये यीशु मसीह को इतना ज्ञान कहां से हुआ?

ध्यान दें। जब यीशु ने मन्दिर में लोगों को उपदेश देना प्रारम्भ किया, तो लोग अचम्भित होकर पूछने लगे,"इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गयी?"

(1) यीशु के दिनों में औसत शिक्षा।

यीशु के दिनों में,केवल उन्हीं पाठशालाओं को मान्यता प्राप्त थी जिनमें धार्मिक शिक्षक पुराने नियम से यहूदी शास्त्र की शिक्षा प्रदान किया करते थे। फरीसियों और सदूकियों के विपरीत, यीशु ने कभी किसी धार्मिक पाठशाला में शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। इसका अर्थ हुआ कि यहूदी व्यवस्थापकों व अगुवों की नज़र में, यीशु किसी भी अधिकृत पाठशाला से प्रमाणिकता प्राप्त करने में असफल थे। इसलिए फरीसियों और सदूकियों ने यह निष्कर्ष निकाल लिया कि जो कुछ यीशु ने शिक्षा दी वह सब गलत थी। यहूदियों को पुराने नियम व आम शिक्षाओं के अर्थ को समझने पर केन्द्रित हुआ करती थी। फरीसियों के नज़रिये से यीशु मसीह केवल अपनी मनगढ़न्त बातें ही बोल रहे थे। इसलिए फरीसियों और सदूकियों ने लोगों से आग्रह किया कि वे उसकी शिक्षाओं को न सुनें।

(2) यीशु की शिक्षाओं का मूल स्रोत।

यीशु ने यह कहते हुए अपने आलोचकों को उत्तर दिया,"मेरे उपदेश मेरे नहीं परन्तु मेरे भेजने वाले के हैं"। किसी भी विद्वान ने यीशु मसीह को शिक्षा नहीं दी थी! खुद परमेश्वर ने ही यीशु को सिखाया था! यहूदी व्यवस्थापक व फरीसी लोग इस बात को कभी भी स्वीकार नहीं कर पा रहे थे कि यीशु मसीह की शिक्षाओं की विषय वस्तु उसे यहूदी पाठशाला से प्राप्त नहीं हुई थी। परमेश्वर खुद शिक्षा का स्रोत है और वह यहूदियों की किसी भी पाठशाला से श्रेष्ठ है। यीशु ने कहा कि उस यह शिक्षा,शिक्षा के मूल :अर्थात परमेश्वर से प्राप्त की(यूहन्ना 8:28;14:24;16:13; 1यूहन्ना 2:27)। यह शत्रु के लिए एक गम्भीर चेतावनी थी, क्योंकि यदि उन्होंने उसकी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दिया, तो उन्होंने वास्तव में सर्वोच्च शिक्षक,अर्थात परमेश्वर की शिक्षाओं को अस्वीकृत कर दिया है!

7:17-18

प्रश्न 4. यीशु मसीह की शिक्षाओं का मूल्यांकन करने के लिए किसी भी व्यक्ति में क्या योग्यता होनी चाहिए?

ध्यान दें। यीशु ने कहा,"यदि कोई परमेश्वर की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय जान जाएगा कि यह परमेश्वर की ओर से है या मैं अपनी ओर से कहता हूँ। जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजने वाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उसमें अधर्म नहीं।" यीशु कहते हैं कि जो कोई उसकी शिक्षाओं को समझना और उसे परखना चाहता है उसमें उचित स्वभाव व उसका उचित उद्देश्य होना चाहिए।

(1) उचित स्वभाव का अर्थ है कि आपमें परमेश्वर की आज्ञा मानने की इच्छा है।

पद 17 में, यीशु कहते हैं, जिस व्यक्ति में बाइबल में प्रगट परमेश्वर की इच्छा को मानने की इच्छा या मनसा नहीं है, उसे कभी भी सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता!

- अपने दिमाग से, वह परमेश्वर के संदेश के मतलब को नहीं समझ पाएगा।
- योग्यता के आधार पर, वह एकमात्र विद्यमान परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाएगा।

पद 17 में, यीशु हमें शिक्षा देते हैं कि परमेश्वर की शिक्षाओं को समझने से पहले आप में परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने की इच्छा और उचित आचरण होना बहुत ज़रूरी है।

(2) सही लक्ष्य परमेश्वर के आदर के लिए काम करना है।

पद 18 में, यीशु ने कहा कि यदि कोई अपनी ही बढ़ाई के लिए बोलता है, तो वह केवल एक ढोंगी है। यहूदियों के व्यवस्थापक व अगुवे ऐसे ही ढोंगी थे। वे चाहते थे कि लोग उन्हें अगुवों और शिक्षकों के रूप में माने, और उनकी धार्मिक लगन के लिए उनकी प्रशंसा करें(अर्थात उनके प्रार्थना करने, उपवास करने, देने, व्यवस्थाओं का पालन करने के लिए)। लेकिन जब लोग यीशु के उपदेशों की ओर आकर्षित हुए तो उन्हें जलन होने लगी! वे तो अपनी ही प्रशंसा और आदर चाहते थे इसलिए उनसे बर्दाश्त नहीं हुआ कि यीशु मसीह परमेश्वर के वचनों को बोल रहे हैं।

लेकिन,यीशु ने परमेश्वर के वचनों को बोला भी और उनका पालन भी किया। उसने अपने पिता को महिमा देने के लिए काम किया। इसलिए उसकी शिक्षाओं पर पूरी तरह से भरोसा किया जा सकता था। जो कोई उसकी शिक्षाओं को समझना और उसे परखना चाहता है उसमें उचित स्वभाव (जो परमेश्वर के वचन अर्थात बाइबल की बातों को मानने के लिए इच्छुक हो)व उसका उचित उद्देश्य(बाइबल के परमेश्वर को आदर देना चाहता हो) होना चाहिए। यीशु मसीह प्रतिज्ञा करते हैं कि ऐसा करने पर वह जन अवश्य ही जान जाएगा कि यीशु की शिक्षाएं वास्तव में स्वर्ग से आती हैं।

7:17

प्रश्न 5. पद 17 में ज्ञान और आज्ञाकारिता के बीच में क्या रिश्ता है?

ध्यान दें। बाइबल में ज्ञान, प्रेम और आज्ञापालन के बीच में एक विशेष रिश्ता है।

(1) ज्ञान,प्रेम और आज्ञाकारिता के बीच रिश्ता। सर्वप्रथम ज्ञान आता है।

यूहन्ना 17:26 में यीशु ने कहा कि उसने अपने चेलों को परमेश्वर का ज्ञान दिया है, ताकि परमेश्वर का प्रेम उनमें बना रहे। यूहन्ना 14:15 में यीशु कहते हैं कि, "यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो,तो तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" अत: परमेश्वर का ज्ञान हमें परमेश्वर को प्रेम करना और परमेश्वर की आज्ञाएं मानना सिखाता है(यूहन्ना 14:21,23)। अत: इन तीनों के रिश्ते में पहला स्थान ज्ञान का, दूसरा प्रेम और तीसरा स्थान आज्ञाकारिता का आता है।

(2) आज्ञाकारिता,प्रेम और ज्ञान के बीच सम्बन्ध। ज्ञान का स्थान दूसरा है।

लेकिन, यूहन्ना 7:17 में लिखा है कि किसी चीज़ को समझने और जानने से पहले तुझे आज्ञा पालन करने के लिए इच्छुक होना चाहिए। और इफिसियों 3:17-19 कहता है कि परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करने से पहले तुम्हें प्रेम में मज़बूत होना चाहिए। अत: परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता परमेश्वर को अधिक प्रेम करना और परमेश्वर का अधिक व्यवहारिक ज्ञान सिखाती है। अत: इन तीनों के बीच सम्बन्ध का क्रम: प्रथम आज्ञाकारिता,दूसरा प्रेम और तीसरा ज्ञान है।

(3) आज्ञाकारिता,प्रेम और ज्ञान आपस में एक दूसरे पर निर्भर हैं।

ये तीनों एक दूसरे पर निर्भर, एक दूसरे पर प्रभाव डालने वाले और एक दूसरे के पूरक हैं:

- दिमाग में ज्ञान
- हृदय में प्रेम
- इच्छा का आज्ञापालन

तीनों में से किसी एक को पहला दर्जा नहीं दिया जा सकता। सर्वप्रथम स्थान परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ अनुग्रह के लिए है। परमेश्वर के अनुग्रह से ही हम ज्ञान,प्रेम और आज्ञाकारिता प्राप्त करते हैं! परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ अनुग्रह हमारे पूरे व्यक्तित्व को प्रभावित व रूपान्तरित कर देता है ताकि हम परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन व्यतीत कर सकें।

कदम 4.इस्तेमाल करें **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 7:1-53 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 7:1-53 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

7:1 ज़्यादातर ऐसे स्थानों से दूर रहना ही अच्छा होता है जहां पर लोग आपको नुकसान पहुँचाना और मारना चाहते हों।

7:5 यदि आपके अपने परिवार के लोग, आपके अभिभावक, भाई और बहिन या बच्चे आपकी बातों पर विश्वास न करें या फिर यीशु पर आपके विश्वास को तुच्छ जानें तो आप हैरान न हों।

7:7. इस संसार की बुराईयों का खुलासा करने पर यदि संसार के लोग आपसे बैर रखें तो आप बिलकुल हैरान न हों।

7:8. हर एक चीज़ के लिए अपना एक सही समय होता है; प्रतीक्षा करने का समय है और काम करने का समय है। सभोपदेशक 4:1-8; 8:5-6 पढ़ें। वैसे ही परमेश्वर का भी प्रतीक्षा करने का और परमेश्वर के काम करने का समय होता है। धरती पर इतिहास व घटनाओं को निर्धारित करने वाला कोई मनुष्य नहीं होता। वरन स्वर्ग में विराजमान सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर की है जो इन ऐतिहासिक घटनाओं को निर्धारित करता है।

7:12. यीशु मसीह को लेकर अगर लोगों के अलग अलग दृष्टिकोण हों तो आप हैरान न हों। आज भी बहुत से लोग यीशु को एक नबी मानते हैं जबकि यीशु वास्तव में मसीह है(7:40-43)। पढ़ें लूका 2:34।

7:14 यीशु मसीह ने उन्हीं स्थानों पर उपदेश दिये, जहां पर लोग धर्म के खोजी थे या धार्मिक मामलों में ज़्यादा रूचि लेते थे। जो लोग परमेश्वर की खोज में लगे हैं उन पर ज़्यादा ध्यान दें।

7:15-16.एक व्यक्ति सम्भवत: किसी प्रशिक्षण केन्द्र या पाठशाला में अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकता है। लेकिन कोई भी जन दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक अर्थात यीशु के चरणों में बैठकर सर्वोत्तम शिक्षा को प्राप्त कर सकता है।

7:17. यदि आप यीशु मसीह की शिक्षा को समझना और उसका मूल्यांकन करना चाहते हैं तो आपके भीतर सही स्वभाव और उसकी आज्ञापालन करने की इच्छा होना ज़रूरी है।

7:18. यदि आप यीशु मसीह की शिक्षा को समझना और उसका मूल्यांकन करना चाहते हैं तो, आपमें सबसे पहले सही लक्ष्य होना और परमेश्वर का आदर करने की चाह करना बहुत ज़रूरी है।

7:20. यदि लोग आपसे कहें कि आप दुष्टात्मा ग्रसित हैं तो हैरान न हों।

7:24. केवल लोगों के बाहरी रूप को देखकर उनकी परिस्थिति और लोगों का न्याय न करें, सही न्याय करें।

7:37-39. जान लें कि जब आप यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, तो पवित्र आत्मा न केवल आपको रूपान्तरित करता, वरन दूसरे लोगों को आशीषित करने के लिए आपका इस्तेमाल भी करता है।

7:47-51. यदि आप स्वयं व्यवस्था का पालन करने में असफल रहते हैं तो दूसरों पर व्यवस्था न जानने का आरोप न लगाएं।

2. यूहन्ना 7:1-53 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं इस बात को अच्छी तरह से जानना चाहता हूँ कि परमेश्वर ने मुझे दूसरों के लिए आशीष का माध्यम बनाया है। उसने मुझे पवित्र आत्मा दिया है कि वह मेरे जीवन और मेरी देह में वास करे,ताकि मैं दूसरों को छुटकारे का सुसमाचार सुना सकूं और जिस प्रेम से परमेश्वर ने मुझे प्रेम किया है ठीक उसी प्रेम से मैं भी दूसरों को प्रेम व उनकी सेवा कर सकूँ।

मैं लगातार परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करना चाहता हूँ, अर्थात बाइबल में लिखे हुए वचनों का पालन। मैं जो प्रचार करता हूँ उसका अपने जीवन में अभ्यास भी करना चाहता हूँ। मैं उन बातों को मानना चाहता हूँ जो मैं बाइबल से जानता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना . **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 7:1-53 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[मध्यस्थता]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के *समूह में लगातार प्रार्थना करें।* एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1.समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।

2.किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को यूहन्ना 7 अध्याय के आधार पर प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3.परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **कुलुस्सियों 3-4 व 1 थिस्लुनिकियों** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। बाइबल की नयी आयतों पर मनन करें तथा उन्हें याद करें। **(6) यूहन्ना 5:24**। रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6.मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।